3

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

अपने विवाह को आत्मिक नींव पर बनाकर

अबिलेन रिपोर्टर न्यूज ने अपने शनिवार के संस्करण में ''परमेश्वर पर नींव'' शीर्षक से टैक्सस की निर्माण कम्पनी पर लेख छापा, जो हर मकान की नींव के नीचे एक बाइबल रखती और घर की चौखट पर बाइबल के कुछ वचन लिखती थी। एक बिल्डर ने बताया कि उनका उद्देश्य ''परमेश्वर को हर काम में महिमा और आदर'' देना है। उसकी पत्नी ने कहा, ''वचन में हमें अपने घर और परिवार में सुलह और शान्ति मिली है, जिस कारण हम चाहते हैं कि इन सब परिवारों (मकान खरीदने वालों) को भी मिले।''[1]

उनका विचार बिल्कुल सही है। क्योंकि परमेश्वर ही विवाह का देने वाला है और उसे ही हमारे विवाहों को चलाने का अधिकार है, इसलिए यह कहना काफी है कि हमारे विवाहों की नींव परमेश्वर ही रखे। जब आप विवाह करें तो आपके विवाह की नींव आत्मिक होनी चाहिए।

आत्मिक नींव की आवश्यकता

कोई विवाह किसी और नींव पर बना हो सकता है। कुछ लोग अपने विवाह की नींव सांसारिक सफलता पर रखते हैं। वे जीवन में आगे बढ़ने के लिए विवाह करते हैं। अन्य लोग अपने घर की नींव अपने परिवार की परम्पराओं पर रखते हो सकते हैं। उनका यह मानना है कि विवाह में उनका काम अपने वंश को बढ़ाना या पुश्तैनी काम को चलाना है। कुछ तो अपने विवाह को किसी और चीज़ से नहीं, बल्कि कामुक प्रेम से बनाए रखने की उम्मीद करते हैं। विवाह करने का उनका एकमात्र उद्देश्य अपनी यौन इच्छाओं को पूरा करना होता है। फिर यदि विवाह के बाद उन्हें कभी यौन सम्बन्ध से उकताहट होने लगे, तो वे विवाह को छोड़कर अपनी यौन इच्छा की पूर्ति के लिए इधर-उधर मुंह मारते हैं।

विवाह का सबसे अच्छ आधार आत्मिक नींव का होना ही है। ऐसी नींव समय के नकारात्मक प्रभावों, जीवन के बदलावों की पीड़ाओं, और इकट्ठे रहते हुए विफलताओं में टिकी रहती है। आत्मिक नींव दो अपूर्ण लोगों को एक-दूसरे को उसकी कमियों के लिए क्षमा करने को प्रोत्साहित करेगी और उन्हें यह अवसर देगी कि वे अपनी कमियों के बावजूद एक-दूसरे के साथ प्रसन्नतापूर्वक रह सकें।

आत्मिक नींव की शर्तें

आप अपना घर आत्मिक नींव पर कैसे बना सकते हैं? मकान की नींव में वचन को रखने से आप अपना लक्ष्य नहीं पा सकते; बल्कि वचन की शिक्षा और भक्तिपूर्ण सोच अपने साथी के साथ आप के जीवन में प्रतिदिन होनी आवश्यक है।

मसीह में एक रहें

आरम्भ मसीह में एक रह कर ही करें। यदि घर धार्मिक और आत्मिक रूप में बंटा हुआ है यानी विवाहित पुरुष और स्त्री अलग-अलग कलीसियाओं में आराधना करते हैं तो परेशानियां आएंगी ही।

मिश्रित विश्वास वाले लोगों में विवाह के नकारात्मक प्रभाव। अलग-अलग विश्वास में बंटे हुए घर में क्या दिक्कतें आती हैं? सबसे पहले तो जीवन भर ऐसे पति-पत्नी अपने भिन्न विश्वास के कारण अधिकांश समय एक-दूसरे से अलग रहकर बिताते हैं। उदाहरण के लिए यदि पत्नी मसीही है और बड़े विश्वास से आराधना में जाती है पर उसका पति नहीं जाता तो वे दोनों एक ही आत्मिक मार्ग पर नहीं चल रहे हैं। अलग विश्वास से कई प्रकार के मतभेद खड़े होते हैं-उदाहरण के लिए महत्व देने में विरोध और नैतिक मानकों आदि में।

इसके साथ ही विश्वास में भिन्नता परिवार में बच्चों के लिए भी मुश्किलें खड़ी कर देता है। यदि माता-पिता विश्वास में एक नहीं होंगे तो बच्चे क्या करेंगे? वे अपना समय अपने माता-पिता की कलीसिया के अनुसार बांट लेंगे। वे कभी एक कलीसिया को चुनेंगे तो कभी दूसरी को।[2] हो सकता है कि इससे उन्हें कुछ नुकसान भी हो; बच्चे ज़रूर परेशान हो जाएंगे जिन्हें यह पता नहीं चलेगा कि वे कहां आराधना करें। इस तरह उनका ध्यान टुकड़ों में बंट जाएगा और एक दिन ऐसा आएगा कि वे किसी भी कलीसिया में न जाना चुनेंगे।

मसीह में एक कैसे हों। स्पष्ट है कि अच्छा यही होगा कि पति-पत्नी एक ही विश्वास के हों। मसीही व्यक्ति के लिए यह अच्छी बात नहीं है कि वे किसी दूसरे विश्वास वाले से विवाह करे। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करने जा रहे हैं जिसका विश्वास आप से अलग है तो आप को पहले ही कोई रास्ता खोजना होगा, जिस से आपका परिवार धार्मिक रूप में इकट्ठा रहे। कैसे? परमेश्वर के वचन बाइबल को पढ़ें और उस पर चलें। बाइबल बताती है कि आप को मसीह में विश्वास रखना (यूहन्ना 8:24); अपने पापों का प्रायश्चित करना (लूका 13:3; प्रेरितों 17:30), मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करना (मत्ती 10:32; रोमियों 10:9, 10), और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना (प्रेरितों 2:38; मरकुस 16:16) आवश्यक है। इन आज्ञाओं को मानें और आप उद्धार पाएंगे और परमेश्वर की कलीसिया में मिला लिए जाएंगे (प्रेरितों 2:47)। नया नियम उस कलीसिया के बारे में बताता है, जिसे यीशु ने बनाया (मत्ती 16:13-20; देखें इफिसियों 5:23-25)। उस कलीसिया के सक्रिय सदस्य बनें, और आप परमेश्वर को प्रसन्न करेंगे, आपके बच्चों को भी आशीष मिलेगी और आप अपने विवाहित जीवन को भी प्रसन्न और सुखी बना सकेंगे।

मसीही लोगों की तरह रहें

यदि आप दोनों मसीही हैं और अपने घर की नींव आत्मिक बनाना चाहते हैं तो आप इसके लिए क्या करेंगे? सबसे पहले तो दोनों पति-पत्नी को आत्मिक लोग बनने के लिए प्रयास करने होंगे-ऐसे लोग जिनका जीवन ऐसा हो जैसा परमेश्वर उनसे चाहता है। बहुत साल पहले एक ट्रैक्ट बहुत प्रसिद्ध हुआ था, जिसका शीर्षक था, ''अच्छे संसार का आरम्भ मुझ से होता है।'' मसीही पति-पत्नी में से दोनों को दृढ़ संकल्प होना चाहिए कि ''अच्छे घर का आरम्भ मुझ

ही से होता है।'' यदि दो मसीही, मसीही जीवन[3] जीने का भरसक प्रयास कर रहे हैं तो उनका विवाह सफल होना चाहिए।

परमेश्वर द्वारा दिए गए पारिवारिक ढांचे को मानें

आपको पारिवारिक ढांचे के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्देशों को मानने के लिए उन पर चलना होगा। उसकी ईश्वरीय योजना पर चलकर आपकी बहुत सी मुश्किलें हल होंगी और आप उनसे बचे भी रहेंगे।

मसीह पुरुष का सिर है। दोनों पति-पत्नी को यह समझ होनी ज़रूरी है कि मसीह परिवार का मुखिया है। पौलुस कहता है कि पुरुष स्त्री का सिर है, लेकिन मसीह पुरुष का सिर है (1 कुरिन्थियों 11:3)। यह बात मसीह को घर का मुखिया बनाती है।

पति-पत्नी का सिर है। फिर बाइबल यह सिखाती है कि पुरुष स्त्री का सिर है; स्त्री को पुरुष के अधीन रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 5:22-24; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1क)। कई लोग इस विचार को पुराना रिवाज़ कहकर इसका खंडन करते हैं, जो स्त्रियों का स्तर नीचे गिराता है और उनके लिए खतरनाक भी है। पत्नियों को इस सम्भावना को कि उन्हें पति के अधीन रहना होगा, अपने लिए खतरा लग सकता है जबकि पतियों को बाइबल की इस डॉक्ट्रिन को अपनी पत्नी के लिए विरुद्ध हथियार के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

समस्या यह है कि बाइबल की इस शिक्षा में जो चार तथ्य हैं उनको लोग समझ नहीं पाते।

(1) मसीही पति का अपनी पत्नी पर अधिकार इस तथ्य पर आधारित है कि वह खुद भी मसीह के अधिकार के नीचे है। इस कारण वह किसी भी प्रकार मसीही शिक्षा के विपरीत डरा-धमका नहीं सकता।

(2) इन शिक्षाओं का श्रेष्ठता या घटियापन से कोई लेना-देना नहीं है; बल्कि वे तो घर के सुचारु ढंग से चलाने के लिए उसकी योजना का भाग हैं। पुरुष के स्त्री का सिर होने का अर्थ यह नहीं है कि वह पत्नी से श्रेष्ठ है, बल्कि विवाह में उसे एक अलग भूमिका निभानी होती है। परमेश्वर ने यह संकेत दिया है कि विवाह में पति का ही नेतृत्व होना आवश्यक है।

(3) पुरुष का मुखिया होना एक-दूसरे के अधीन होने के संदर्भ में मिलता है। इफिसियों 5:22, में पत्नियों को अपने पतियों के अधीन होने की बात लिखने से पहले उसने लिखा कि हर मसीही को ''एक-दूसरे के अधीन होना'' चाहिए, जो इफिसियों 5:21 में कहा गया है। कुछ अर्थ में पुरुष को स्त्री की अगुआई करने के लिए उसके अधीन भी होना पड़ता है।

(4) पुरुष के लिए अगुआई करने के साथ-साथ यह भी जुड़ा है कि वह अपनी पत्नी से इतना प्रेम करे जितना वह अपने आप से करता है यानी अपने शरीर से करता है। उससे (पत्नी से) इतना प्रेम करता है, जितना मसीह ने कलीसिया से किया (इफिसियों 5:25, 28, 33)। मसीह अपनी कलीसिया अपनी दुल्हन से कितना प्रेम करता है![4] इतना कि उसके लिए मर गया! उसी प्रकार पति को परिवार की अगुआई करनी आवश्यक है; लेकिन उसे इस प्रकार अगुआई करनी है कि वह मसीह का नमूना दिखा सके, जो कलीसिया के लिए मर गया।

अपनी पत्नी से ऐसे प्रेम करने वाला पति कभी भी जान-बूझकर उसे दुख नहीं पहुंचाएगा और न उसकी अनदेखी करेगा, वह उसके लिए सब कुछ करेगा यहां तक कि वह उसे लिए जान

भी दे देगा। उसकी सबसे बड़ी इच्छा उसे प्रसन्न रखना होगा। यदि पति का व्यवहार ऐसा होगा तो पत्नी कभी भी उसकी अगुआई में खतरा महसूस नहीं करेगी।

बच्चे को अपने माता-पिता का कहना मानने। बाइबल बताती है कि बच्चे को अपने माता-पिता का आज्ञाकारी हों (इफिसियों 6:1-3)। अपने घर की नींव परमेश्वर और उसके वचन पर रखने वाले पतियों को चाहिए कि वे पालन-पोषण की ऐसी किसी भी शिक्षा का बहिष्कार करें जो यह सिखाती हो कि माता-पिता को बच्चों को सिखाने-सुधारने का कोई अधिकार नहीं है। वे चाहेंगे कि उनके बच्चे उसका सम्मान करें।

कलीसिया के महत्व को समझें

इसके साथ ही, यदि आप अपना घर मसीह पर बनाना चाहते हैं तो कलीसिया का आपके विवाह में एक महत्वपूर्ण योगदान होना आवश्यक है। मसीह और उसकी कलीसिया को अलग नहीं किया जा सकता;[5] यदि कोई मसीह और उसकी कलीसिया की उपेक्षा करके यह साबित करना चाहे कि वो मसीह में है तो वह गलत है। कलीसिया का आपके जीवन में महत्व इन बातों को दिखाता है, (1) जितना समय आप इसे देते हैं, (2) जितना पैसा आप इसे देते हैं और (3) इसकी उन्नति के लिए जितना आप अपने हुनर का इस्तेमाल करते हैं।

वे विवाह, जिसमें दोनों पति-पत्नी अपने काम में तो व्यस्त हैं, लेकिन कलीसिया के साथ आराधना में नहीं, उनका तलाक हो सकता है; लेकिन वे अधिक देर तक रह सकते हैं, बजाय उस विवाह से बढ़कर जिसमें दोनों साथी कलीसिया में सक्रिय नहीं हैं। विवाह पर आराधना सभा में भाग लेने का असर 1980 के एक लेख में विस्तार से दिया गया है।

> वैवाहिक सम्बन्धों की अस्थिरता की गिरती सम्भावना के साथ कलीसिया में उपस्थिति का बड़ा गहरा सम्बन्ध है। वर्ष में एक बार से अधिक आराधना में भाग लेने वाले दम्पत्तियों में तलाक या अलगाव की दर 34.5 प्रतिशत थी; वर्ष में एक से अधिक बार आराधना में भाग लेने वालों में यह दर 26.7 प्रतिशत थी; मासिक या इससे अधिक बार कलीसिया में जाने वालों में यह दर 18.1 प्रतिशत थी। इसके अलावा लगातार कलीसिया में जाने वालों का विवाह एक बार से कम कलीसिया में जाने वालों की अपेक्षा 2.6 गुणा मज़बूत होता है।[6]

घर को धार्मिक स्थान बनाएं

फिर, याद रखें आपका घर ऐसा स्थान हो, जहां परमेश्वर को महिमा दी जाए और बाइबल सिखाई जाए। समाज में घर ही एक ऐसी जगह है, जहां प्रारम्भिक धार्मिक शिक्षा मिलती है। विश्वास को घर से ही सीखा और समझा जाता है। माता-पिता के जीवनों से ही विश्वास का वास्तविक अर्थ सीखा जाता है। मसीही घर में यह तब मिलता है जब पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति विश्वास अपने बच्चों को दिखाते हैं। कैसे? माता-पिता की ओर से बच्चे को लगातार विश्वास मिलता है। यह व्यवस्थाविवरण 6:6, 7 में बताया गया है:

> और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें अपने

बाल-बच्चों को समझा कर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिह्नानी करके बान्धना, और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने-अपने घर की चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।

यदि घर में रहने वाले इन आज्ञाओं का पालन करेंगे तो आज वह घर कैसा होगा? परिवार इकट्ठा मिलकर प्रार्थना और आराधना करता है। बाइबल पढ़ी और सीखी जाती है। परमेश्वर के वचन में से शिक्षा देने के लिए उत्तर दिए जाते हैं। कलीसिया के कामों को दूसरे कामों से पहल दी जाती है। माता-पिता यीशु के पदचिह्नों पर चलने की कोशिश करते हुए परमेश्वर को श्रेय देने की कोशिश करते हैं ''हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान'' देने के लिए (याकूब 1:17)। ऐसे माहौल में बच्चों का विश्वास अपने आप बढ़ता है। इससे भी बढ़कर ऐसे घरों में पनपने वाला विश्वास एक गोंद की तरह काम करता है, जो वैवाहिक जीवन को जोड़े रखता है, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो।

आत्मिक लक्ष्यों को प्राथमिकता दें

अन्ततः आत्मिक उद्देश्य को घर की दिशा तय करने दें। शादी होने पर आपके कई उद्देश्य होंगे। आप एक संतोषजनक आपसी रिश्ता बनाना चाहेंगे। आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करना चाहेंगे, ताकि आपको कोई अच्छी नौकरी मिले, जिससे आप अपने परिवार का पोषण कर सकें। ऐसे उद्देश्य रखना बिल्कुल गलत नहीं है, लेकिन जिस परिवार के सभी लोग पूरी तरह से यीशु को समर्पित होते हैं, उनका लक्ष्य इससे ऊंचा होता है: स्वर्ग में जाना![7] मसीही जिनका घर आत्मिक नींव पर खड़ा होता है, चाहते हैं कि उनके घर के सभी लोगों का उद्देश्य हो, दूसरों की मदद करना-जहां तक हो सके, उन्हें स्वर्ग में जाने की मदद करना। यदि आपका मुख्य उद्देश्य मसीह की सेवा करना और स्वर्ग में जाना है, तो यह उस पर निर्भर रहेगा कि आपका जीवन है। आप एक बैंकर बनने के बजाय प्रचारक बनना चाहेंगे। यह जहां, आप रहते हैं उस पर निर्धारित होगा, क्योंकि यह आप ही चुनेंगे कि आप घर के पास ही रह कर मिशन का काम करेंगे या मिशन में फील्ड वर्क करेंगे। यह इस पर आधारित होगा कि आपका स्कूल कहां था, आपने कौन सा पेशा चुना या आपने अपने बच्चों को कहां स्कूल भेजा। जो भी फैसला आप लेंगे, उसका उत्तर इस प्रश्न के उत्तर के रूप में ही होगा, ''मेरे और आपके परिवार के लिए उचित होगा-हमारे द्वारा दूसरों की भलाई-उन्हें स्वर्ग तक पहुंचाने के लिए।''

यह विचार एक जवान पुरुष, जो हमारा दामाद है, के उदाहरण से मिला, जिसने मुझ से और मेरी पत्नी से मेरी बेटी के साथ विवाह करने की आज्ञा मांगते हुए एक पत्र लिखा। उस पत्र के एक अंश में यह लिखा था:

मेरे डैड मुझे ऐसी लड़की ढूंढने को प्रोत्साहित करते हैं, जो स्वर्ग में जाने में मेरी मदद करे और मुझे वह लड़की डी ऐन के रूप में मिल गई है। क्षमा चाहता हूं कि मैं आप दोनों को वे सब बातें नहीं बता सकता, जिन पर मैंने और डी ऐन ने चर्चा की है। मैं उससे विवाह करना चाहता हूं और जानता हूं कि वह भी ऐसा ही चाहती है, यदि इसके लिए आपकी

अनुमति मिल जाए, जिसकी मुझे उम्मीद भी है, क्योंकि मैं अब उसके बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता।[8]

वास्तव में हर मसीही को ऐसे जीवन साथी की तलाश करनी चाहिए, जो स्वर्ग में जाने में उसकी मदद करे।

घर की नींव में बाइबल को दबाने का कोई सांकेतिक महत्व हो सकता है, लेकिन यह अधिक आवश्यक है कि उसमें रहने वाला परिवार अपने जीवनों की आत्मिक नींव परमेश्वर के वचन पर रखे। अपने विवाह पर, इसे अपने जीवन का लक्ष्य बना लें।

टिप्पणियां

[1]माइकल ग्रेज़िक, ''फाउंडेशन ऑन गॉड,'' *अबिलेन रिपोर्टर-न्यूज़* (26 अगस्त 2005): सी1. [2]धार्मिक रूप में मिले जुले पति-पत्नी के बच्चे कई बार कलीसिया में माता या पिता दोनों में से एक के पीछे जाते हैं, जैसे मेरी पत्नी भी जाती थी। ऐसा होने पर प्रभु प्रसन्न होता है; पर तब भी बच्चों और माता या पिता के बीच धार्मिक फूट हो जाती है। [3]इसके लिए मसीही प्रेम से प्रेम करने (1 कुरिन्थियों 13:4-7), आत्मा का फल लाने (गलातियों 5:22, 23), और मसीही अनुग्रहों में बढ़ने (2 पतरस 1:5-7) के गम्भीर प्रयास आवश्यक हैं। [4]मरकुस 2:19 यीशु ने कलीसिया को दुल्हन कहा, जैसे पौलुस ने भी 2 कुरिन्थियों 11:2 में कहा। (देखें प्रकाशितवाक्य 21:2, 9; 22:17.) [5]उदाहरण के लिए, इफिसियों 1:22, 23 के अनुसार कलीसिया मसीह की ''परिपूर्णता'' है। इफिसियों 5:23-31 मसीह और उसकी कलीसिया के सम्बन्ध को बताता है। [6]वैस्ली श्रम, ''रिलिजन एण्ड मैरिटल इन्स्टेबिलिटी: चेंज इन द 1970स?'' *रीव्यू ऑफ़ रिलिजियस रिसर्च* 21 (1980): 135-47. अतिरिक्त जानकारी ग्लैन टी. स्टैंटन, ''द रोल फेथ प्लेज़ इन मैरिज एण्ड द लाइकलिहुड ऑफ़ डाइवोर्स,'' सिटिज़न लिंक-फोक्स ऑन सोशल इश्यु (http://www.citizenlink.org/FOSI/marriage/A000000901.cfm; इंटरनैट; 31 अक्तूबर 2008 को देखा गया) में है। स्टैंटन ने लिखा है कि ''इवैंजलिकल लोग जो लगातार कलीसिया में जाते हैं, उनके तलाक की दर सांसारिक दम्पत्तियों की अपेक्षा 35 प्रतिशत कम होती है।'' उसने पाया कि तलाक की दरों में यह अन्तर धार्मिक कहलाने वालों और धार्मिक न कहलाने वालों का नहीं बल्कि लगातार कलीसिया की सेवाओं में भाग लेने वालों और कलीसिया की सेवाओं में भाग न लेने वालों का है। हाल ही की कुछ रिपोर्टों में से ऐसे ही सहसम्बन्ध की झलक मिलती है। 2006 के अध्ययन के सहलेखक समाजशास्त्री ब्रेट विलकोक्स ने इस बात की पुष्टि की कि कलीसिया में जाते रहने वाले लोगों में तलाक कम पाया जाता है: मैं उन अमेरिकी लोगों की अपेक्षा जो वर्ष में एक या दो बार कलीसिया में जाते या जो बिल्कुल ही नहीं जाते 35 से 50 प्रतिशत कम होने का अनुमान लगाता हूं। यह सच है कि नये जन्म का अनुभव पाने की बात कहने वालों में तलाक उतना ही पाया जाता है जितना पूर्णतया सांसारिक लोगों में। पर यदि कलीसिया की उपस्थिति के चश्मे से देखें तो आपको कहानी अलग ही दिखाई देगी (स्टैन गुथरी, ''वट मैरिड वुमेन वांट,'' ब्रेड विलकोक्स के साथ साक्षात्कार [http://www.christianitytoday.com/ct/2006/october/53.122.html; इंटरनैट; 24 अक्तूबर 2008 को देखा गया])। इस अध्ययन के परिणाम ऑनलाइन उपलब्ध हैं: Steven L. Nock and W. Bradford Wilcox, "What's Love Got to Do with It? Equality, Equity, Commitment, and Women's Marital Quality" (http://www.virginia.edu/sociology/peopleofsociology/wilcoxpapers/Wilcox%20Nock%20marriage.pdf; इन्टरनैट; 24 अक्तूबर 2008 को देखा गया). [7]मसीही लोग 2 तीमुथियुस 4:7, 8 में बताए गए ''धर्म का मुकुट'' पाना चाहते हैं। [8]इयन शैफर्ड, ब्लैक टाउन, न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया, कोय और शारलट रोपर के नाम निजी पत्र, 2 जुलाई 1978.